International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

भारतीय विदेश नीति पर इंदिरा गांधी का प्रभाव: एक मूल्यांकन

वंश गोपाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
गोसवामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी, चित्रकूट

सारांश
भारत की विदेश नीति निर्धारण में राष्ट्र नेताओं का व्यक्तित्व उनके अनुभव, आदर्श तथा योग्यताओं ने निर्णायक भूमिका निभायी, यहाँ पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा इन्दिरा गाँधी के व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट दृष्टिगत होती है, इन राजनेताओं ने भारतीय विदेश नीति को एक स्पष्ट दिशा एवं सिद्धान्त प्रदान किया। इन सिद्धान्तों में गुटनिरपेक्षता पंचशील साम्राज्यवाद का विरोध, जातिभेद का विरोध, अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का शान्तिपूर्णसमाधान, विदेशी आर्थिक सहायता तथा संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन आदि सम्मिलित थे। उक्त उनकी सारे सिद्धान्त तत्कालीन परिस्थितियों में राष्ट्रीय हितों एवं उनकी अभिवृद्धि के परिप्रेक्ष्य में ही संचालित किये गये। पं० जवाहरलाल नेहरू अखिल एशियावाद, अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के समर्थक थे उनके तथा प्रधानमंत्रित्वकाल में भारत की विदेश नीति आदर्शवाद की ओर झुकी रही और कुछ अपवादों को छोड़कर अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति में सफल भी रही।तथा इस काल में पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा निर्धारित लक्ष्य नीति निर्धारण तथा निर्णय की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता के अनुरूप भारतीय विदेश नीति को संचालित किया गया और इसी आधार पर स्वतंत्र निर्णय करने की गुट निरपेक्षता की नीति को अपनाया गया।सन् 1966 में श्रीमती इन्दिरा गाँधी के नेतृत्व में बनी सरकार ने भारतीय विदेश नीति को बदली हुई परिस्थितियों और अपने यथार्थवादी व्यक्तित्व के अनुरूप एक परिवर्तन के साथ संचालित किया।

शब्दकुंजी- भारतीय विदेश नीति, राष्ट्रीय हित, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, आदर्शवाद, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग ।

प्रस्तावना

अंतरराष्ट्रीय विश्व में विविध राष्ट्र अपने विदेशी संबंधों के संचालन हेतु जो व्यवहार करते हैं वह उनके राष्ट्रीय हित की पूर्ति एवं अभिवृद्धि के परिपेक्ष में होता है इसमे अंतर्निहित लक्ष्य राष्ट्र हित ही होता है जिससे वे शक्ति सहित समस्त साधनो से प्राप्त करने हेतु तत्पर रहते हैं मोटे तौर पर राष्ट्रों द्वारा किये गये इस आचरण को ही विदेश नीति की संज्ञा दी जाती है दूसरे शब्दों में, विदेश नीति राष्ट्रों द्वारा विकसित उन नीतियों एवं मान्यताओं का समूह है, जिनके द्वारा कोई राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा, पूर्ति एवं अभिवृद्धि करता है।
प्रो० महेन्द्र कुमार के अनुसार, विदेश नीति किसी राष्ट्र का ऐसा सुविचारित उपाय एवं कार्यक्रम है, जिसके द्वारा विदेश संबंधों के उद्देश्यों को राष्ट्रीय हित की विचारधारा के अनुसार प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

जार्ज मॉडल्स्की के अनुसार, "विदेश नीति राष्ट्रों द्वारा विकसित उन क्रिया कलापों का समुच्चय तथा दूसरे राष्ट्रों के व्यवहार को अपने अनुसार बदलने वाले कार्यों की व्यवस्था है तथा अंतर्राष्ट्रीय वातावरण में अपने कार्यों का समायोजन है।"

जे०आर० चाइल्ड के अनुसार, "विदेश नीति किसी राज्य के विदेश संबंधों का सार होती है।"

केथ आर० लोग तथा जेम्स एफ मॉरीशनके अनुसार, "विदेश नीति किसी राष्ट्र द्वारा विकसित उद्देश्यों का वह समूह है, जो अन्य राष्ट्रों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के सम्बन्ध में लागू किया जाता है। यह उन प्रवृत्तियों और तौर-तरीकों का समूह है, जो किसी राष्ट्र के इन उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास करता है।"

हैंस जे० मॉर्गेन्थाऊ के अनुसार, "विदेश नीति शक्ति के रूप में परिभाषित राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति का एक साधन है।"

जहाँ शक्ति मनुष्य के मस्तिष्क एवं कार्यों पर नियंत्रण की क्षमता है।

इस प्रकार सार रूप में विदेश नीति के अंतर्गत निम्न तत्व समाहित हो जाते हैं—

- किसी राष्ट्र के उद्देश्य
- राष्ट्र की नीति संबंधी योजनाएँ
- राष्ट्र की वास्तविक कार्य एवं गतिविधियाँ

वास्तव में किसी राष्ट्र की विदेश नीति निर्माण का कार्य एक जटिल संगठनात्मक ढाँचे की सहायता से किया जाता है, जिसमें बहुत से कारकों एवं तत्वों की श्रृंखला होती है, जिन्हें विदेश नीति के निर्धारक तत्व कहा जाता है।

जेम्स एन० रोजेनाउ ने इन कारकों/तत्वों को विदेश नीति के निवेश की संज्ञा दी है।

थॉम्पसन तथा ने विदेश नीति के निर्धारक तत्वों को तीन भागों में विभाजित किया है—

1. सापेक्षतया स्थायी भौतिक, निर्धारक तत्व- इसके अंतर्गत किसी राष्ट्र के भूगोल, प्राकृतिक स्त्रोत, खनिज पदार्थ, खाद उत्पादन, शक्ति तथा ऊर्जा आदि तत्व सम्मिलित किये गये हैं।
2. सापेक्षतया कम स्थायी मौतिक निर्धारक तत्व -इसके अंतर्गत किसी राष्ट्र केऔद्योगिक प्रतिष्ठान, सैन्य प्रतिष्ठान, तथा सैन्य क्षमताओं में परिवर्तन आदि तत्वों को समाहित किया गया है।
3. मानवीय निर्धारक तत्व -इसरे अत्र्तगत -जनसंख्या, नीति निर्माता तथा नेता, विचारधारा की भूमिका, सूचना एवं संचार आदि तत्व सम्मिलित किये गये हैं वर्तमान में विद्वानों ने विदेश नीति निर्धारण में निम्न, को, समाहित माना है-
   - राष्ट्र का भूगोल या भौगोलिक कारक।
   - आर्थिक विकास एवं संसाधन ।
   - राष्ट्र का इतिहास एवं संस्कृति।
   - सामाजिक ढ़ांचा एवं राष्ट्रीय चरित्र ।
   - राष्ट्रीय शक्ति एवं तकनीकी विकास ।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

- राष्ट्रीय हित।
- राष्ट्र की आन्तरिक स्थिति तथा परिस्थितियाँ।
- अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ, समझौते तथा सन्धियाँ।
- राजनीतिक ढ़ांचा, जनमत तथा विचारधारा।
- राष्ट्र नेताओं का व्यक्तित्व, अनुभव, उनके आदर्श तथा योग्यतायें आदि ।

अध्ययन के उद्देश्य -

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य इंदिरा गांधी के नेतृत्व एवं व्यक्तित्व का भारतीय विदेश नीति पर पड़े प्रभाव का समग्र मूल्यांकन करना है-

1. इंदिरा गांधी के नेतृत्व एवं व्यक्तित्व का विश्लेषण करना ।
2. भारतीय विदेश नीति के प्रमुख निर्णयों का मूल्यांकन करना ।
3. गुटनिरपेक्षता की नीति में परिवर्तन का अध्ययन करना ।
4. महाशक्तियों के साथ भारत के संबंधों का विश्लेषण करना ।
5. राष्ट्रीय हित और सुरक्षा नीति के संदर्भ में योगदान का मूल्यांकन करना ।
6. व्यक्तित्व कारक की भूमिका को स्पष्ट करना ।

साहित्य समीक्षा –

1. सुरजीत मान सिंह (1984): इंडियाज सर्च फॉर पॉवर : इंदिरा गांधी की विदेश नीति 1966–1982 पुस्तक में इंदिरा गांधी की विदेश नीति का व्यापक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। लेखक के अनुसार इंदिरा गांधी ने पारंपरिक गुटनिरपेक्ष नीति को व्यावहारिक रूप में बदलकर शक्ति-संतुलन की नीति अपनाई। यह पुस्तक इंदिरा गांधी की विदेश नीति को "Power-oriented diplomacy" के रूप में प्रस्तुत करती है।
2. सवाई सिंह सिसोदिया (1985) भारतीय विदेश नीति में इंदिरा गांधी युग पुस्तक में गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के संदर्भ में इंदिरा गांधी की विदेश नीति का अध्ययन किया है। भारत-पाकिस्तान एवं चीन संबंध, सोवियत संघ के साथ संबंध, परमाणु नीति। लेखक के अनुसार, इंदिरा गांधी ने गुटनिरपेक्षता को "सक्रिय और रणनीतिक" रूप दिया।
3. . ए.के. दामोदरन और यू.एस.वाजपेयी (1990) भारतीय विदेश नीति: पुस्तक में इंदिरा गांधी के काल की विदेश नीति का बहुआयामी विश्लेषण किया गया है। विदेश नीति की पृष्ठभूमि: इंदिरा गांधी का योगदान: महाशक्तियों के साथ संबंध। लेखकों ने यह निष्कर्ष दिया कि इंदिरा गांधी ने भारत की विदेश नीति को अधिक यथार्थवादी बनाया।

जोसेफ फैकेल तथा हरीश कपूर ने बताया कि भारत जैसे विकासशील, राष्ट्र, जहाँ राजनीतिक राष्ट्र संस्थाएं इतनी विकसित अवस्था में नहीं है। यहाँ नेता का व्यक्तित्व विदेश नीति निर्धारण में निर्णायक भूमिका में दृष्टिगत हुआ है। उन्होंने इसके तीन कारण बताये-

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

1. भारत में विदेश नीति निर्माणक संस्थायें विकसित अवस्थामें न होने अथवा पर्याप्त प्रभावी न होने के कारण प्रधानमंत्री को अधिक प्रभावित नहीं कर पाती है।
2. भारतीय समाज परम्परागत प्रवृत्ति का होने के कारण देश की जनता राजनीति के शीर्ष पर बैठे व्यक्ति को लगभग पूजने सी लगती है और उनके निर्णयों को सामान्यतयः चुनौती नहीं देती है।
3. अधिकांश जनसंख्या विदेश नीति से सम्बन्धित मामलों को सारपूर्ण रूप से समझने की क्षमता नहीं रखती जिससे विदेश नीति से सम्बन्धित मामले प्रधानमंत्री तथा उसके अधीनस्थों तक सीमित रह जाते हैं।

हालांकि आलोचक फैकेल तथा हरीश कपूर के तर्कों से पूर्णतया सहमत नहीं है, किन्तु फिर भी उक्त बातेंभारतीय विदेश नीति निर्धारण में कमोवेश सत्य के निकट दृष्टिगत होती हैं।

वास्तव में भारत की विदेश नीति निर्धारण में राष्ट्र नेताओं का व्यक्तित्व उनके अनुभव, आदर्श तथा योग्यताओं ने निर्णायक भूमिका निभायी, यहाँ पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा इन्दिरा गाँधी के व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट दृष्टिगत होती है, इन राजनेताओं ने भारतीय विदेश नीति को एक स्पष्ट दिशा एवं सिद्धान्त प्रदान किया।

पं० जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्रित्व काल में भारतीय विदेश नीति ब्रो अपने राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति, भारतीय दर्शन, मूल्यों तथा परम्परा के अनुरूप थी। इन सिद्धान्तों में गुटनिरपेक्षता पंचशील साम्राज्यवाद का विरोध, जातिभेद का विरोध, अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का शान्तिपूर्णसमाधान, विदेशी आर्थिक सहायता तथा संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन आदि सम्मिलित थे। उक्त उनकी सारे सिद्धान्त तत्कालीन परिस्थितियों में राष्ट्रीय हितों एवं उनकी अभिवृद्धि के परिप्रेक्ष्य में ही संचालित किये गये।

पं० जवाहरलाल नेहरू अखिल एशियावाद, अन्तर्राष्ट्रीयताद के समर्थक थे और वे भारत के राष्ट्रीय हितों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति नैतिक मूल्यों को आधार बनाकर अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, निशस्त्रीकरण आदि के माध्यम से करना चाहते थे। अतः उनके तथा प्रधानमंत्रित्वकाल में भारत की विदेश नीति आदर्शवाद की ओर झुकी रही और कुछ अपवादों को छोड़कर अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति में सफल भी रही।तथा इस काल में पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा निर्धारित लक्ष्य नीति निर्धारण तथा निर्णय की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता के अनुरूप भारतीय विदेश नीति को संचालित किया गया और इसी आधार पर स्वतंत्र निर्णय करने की गुट निरपेक्षता की नीति को अपनाया गया।सन् 1966 में श्रीमती इन्दिरा गाँधी के नेतृत्व में बनी सरकार ने भारतीय विदेश नीति को बदली हुई परिस्थितियों और अपने यथार्थवादी व्यक्तित्व के अनुरूप एक परिवर्तन के साथ संचालित किया।

श्रीमती गाँधी ने भारतीय विदेश नीति को अधिकाधिक परिस्थितिजन्य, यथार्थवादी तथा हुए समयानुकूल बनाते का प्रयास किया। उन्होंने इस बात का अनवरत प्रयास किया कि भारत विद्यमान बड़ी शक्तियों के प्रभाव में आये बिना स्वतंत्र रूप से अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप निर्माण की ओर अग्रसर हो सके। श्रीमती गाँधी ने राष्ट्रीय हितों को केन्द्र में रखते हुए सर्वप्रथम अमेरिकी विस्तारवाद तथा साम्यवादी प्रसार के मध्य

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

संतुलन स्थापित करने के आवश्यक उपायों के रूप में अपने पड़ोसियोंदक्षिणपूर्व एशिया, अरब, इस्राइल आदि राष्ट्रों से सम्बन्धों में सुधार के प्रयास किये। (कुबैत 1975, ईरान 1974, वर्मा 1967, श्रीलंका 1974) दृष्टिकोण श्रीमती गाँधी ने अपने विश्व दृष्टिोण में भारतीय उपमहाद्वीप को सर्वाधिक महत्व देते हुए पाकिस्तान से भी सदैव अच्छे सम्बन्ध विकसित करने के प्रयास किये, किन्तु पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) का विवाद अन्तोगत्वा भारत-पाक युद्ध के रूप में सन् 1971 में सामने आया, जिसमें भारत की विजय भी हुई, किन्तु फिर भी भारत ने पाक से सम्बन्धों में सुधार के द्वार खोले रखे और भारत द्वारा स्वयं युद्ध विराम की घोषणा एवं शिमला समझौता किया गया। की नीति भारत द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप को प्राथमिकता की नीति के क्रम में भारत द्वारा बांग्लादेश सरकार से सन् 1972 में 25 वर्षीय संधि तथा दक्षिण पूर्व एशिया एवं पश्चिम एशिया के देशों से आसियान के तत्वाधान में प्रादेशिक सहयोग को प्रोत्साहित किया गया। अफ्रीकी देशों से भी घनष्ठि आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी सम्बन्ध विकसित किये गये। श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा किये गये उक्त सारे कार्य उनके बोस एवं पधार्थवादी नीति के परिचायक थे। सुरजीत मान सिंह तथा बन्धोपाध्याय आदि ने इन्दिरा गाँधी की विदेशनीति में यथार्थवादी प्रभाव को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत विश्लेषित किया है- (1) भारत द्वारा सन् 1968 में एन.पी.टी. पर हस्ताक्षर न करना, क्योंकि भारत के अनुसार यह संघि किसी भी स्थिति में चीन से भारत को उत्पन्न खतरों को कम नहीं कर रही थी और साथ ही यह संधि गैर परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों को परमाणु क्षमता प्राप्त करने का अधिकार भी नहीं देती थी, जोकि भेदभावपूर्ण था। (2) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के इस यथार्थवादी तथ्य को प्रधानता देना कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में कोई भी स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होते बल्कि राष्ट्रों के राष्ट्रीय हित प्रधान होते हैं। भारत द्वारा सन् इस कारण व्यवहारिक असंलग्नतावाद को अपनाते हुए भारत द्वारा रूस के साथ सन1971 में
शान्ति, मित्रता एवं सहयोग की संधि की, गई जिससे अमेरिका, चीन आदि राष्ट्र नहीं कर पाये पाकिस्तान की प्रभावी मदद नहीं कर पाएऔर पाकिस्तान की युद्ध में हार हुई। इस प्रकार महाशक्तियों की दण्डात्मक कार्यवाही की परवाह न करते हुए, इन्दिरा गाँधी द्वारा बांग्लादेश समस्या हल की गयी। (3) इस बात का तथात्मक आंकलन कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा गुटनिरपेक्षता की नीति के बावजूद तभी सम्भव हो सकती है जबकि भारत सैन्य प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ले, अतः अन्य देशों की परवाह न करते हुए मई, 1974 में परमाणु परीक्षण (पोखरन प्रथम) किया गया। (चीन 1967 में ही परमाणु परीक्षण कर चुका था तथा पाक को अमेरिका द्वारा अप्रत्यक्ष सहायता दी जा रही थीं।) (4) 1974-75 में भारत द्वारा सिक्किम की जनता के अनुरोध पर चीन की परवाह न करते हुए सिक्किम का भारत में विलय किया गया, जिसने चीन को तिब्बत विलय की याद दिलाई। (5) अफगानिस्तान में सोवियत संघ के हस्तक्षेप के कारण भारत के निकट आ चुके शीतयुद्ध को दूर करने के लिये श्रीमती इन्दिरा जी ने सोवियत संघ को भी यह बता दिया कि "भारत किसी भी देश में बाहरी सेना की उपस्थिति को अनुचित मानता है" इस प्रकार भारतीय विदेश नीति सोवियत सेना को इस क्षेत्र में आने से रोकने में सफल रहीं। अतः उपरोक्त तथ्य यह दर्शाते हैं कि श्रीमती इन्दिरा गाँधी के प्रधानमंत्रित्व काल में उनके प्राप्त ने यथार्थवादी व्यक्तित्व के अनुरूप भारतीय विदेश नीति

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

को नये आयाम एवं ऊँचाइयाँ प्रदान की। इसमें राष्ट्रीय हितों के अनुरूप यथार्थवाद का अधिकाधिक पुट रहा। इस काल में भारतीय विदेश नीतिको यथार्थपरक परिस्थितिजन्य, समयानुकूल बनाने का प्रयास किया गया, जिससे राष्ट्रीय हितों की बदली हुई परिस्थिति के अनुरूप प्राप्ति सम्भव हो सके। श्रीमती गाँधी ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल, अन्तराष्ट्रीय परिस्थितियों से सीख लेते हुए अपने यथार्थवादी स्वाभावानुकूल भारतीय विदेश नीति को इस प्रकार अनवरत ढ़ालने का प्रयास किया कि भारत विद्यमान बड़ी शक्तियों के प्रभाव में आये बिना स्वतंत्र रूप से अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप राष्ट्र निर्माण की ओर अग्रसर हो सके। श्रीमती गाँधी इस सबके बावजूद इन्दिरा, की ने पंडित नेहरू द्वारा निर्धारित उद्देश्यों, सिद्धान्तों आदि में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं किया, लेकिन भारतीय विदेश नीति को और अधिक यथार्थपरक श्रीमती गाँधी बनाने की चेष्टा अवश्य की। इसी का परिणाम था कि इन्दिरा जी के नेतृत्व में भारत अपने पड़ोसियों के प्रति सहज स्थान तो पो हौवाका साथ ही महाशक्तियों की दृष्टि में भी महत्वपूर्ण तथा स्थान प्राप्त कर सका। भारत भारतीय विदेश नीति के इस काल के अध्ययन से अतः इस काल की विदेश नीति से यह स्पष्ट दृष्टिगत होता है कि किसी देश की विदेश आदि ने नीति के निर्धारण एवं संचालन में नेतृत्वकर्ता का व्यक्तित्व, उसकी सोच अहम भूमिका निभाती है। निभायी है।

संदर्भ सूची

1. ए. अम्पादोराय व एम.एस. राजन- इण्डियाज फारेन पॉलिसी एण्ड रिलेशन, नई दिल्ली 1985.
2. सुरेन्द्र चोपड़ा, इण्डो पाक रिलेशन स्टडीज इन इण्डियाज फारेन पॉलिसी, अमृतसर 1980.
3. के० सुब्रामण्डयम, नेहरू कांसेप्ट ऑफ डिफेंस IDSA Genrels Vol.-2, Feb. 1
4. George Modelski A theory of foreign policy, London 1962.
5. Nehru: India's foreign policy, Publication division Govt. of India, New Delhi 1961.
6. हरीश कपूर: इंडियाज फारेन पॉलिसी 1947-92 नई दिल्ली 1994.
7. भारत की विदेश नीति बी.एन. खन्ना, लिपाक्षी अरोड़ा, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 2016.
8. पुष्पेश पंत : 21वीं शताब्दी में अन्त्तसम्बन्ध टाटा मैकग्रा हिल्स एजुकेशन प्रा० लिमिटेड, नई दिल्ली 2010.
9. एन. एस. राजन, इण्डियाज फारेन रिलेशन्स, डयूरिंग नेहरू ईरा सन स्टडीज नई दिल्ली 1976.
10. सुरजीत मान सिंह, इण्डियाज सर्च फार पावर इन्दिरा गान्धीज फारेन पालिसीज 1966-1982 नई दिल्ली .
11. वी०पी० दत्त: इण्डियाज फारेन पॉलिसी, नई दिल्ली 1987.
12. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध डॉ० पुष्पेश पंत एण्ड श्रीपाल जैन, मीनाक्षी प्रका० मेरठ 2006.
13. के०के० पाठक, इण्डियाज न्यूक्लिर पॉलिसी नई दिल्ली 1980.
14. Yogendra Malik, Indira: The Years of Indira Gandhi 1988.
15. U.S. Bajpai, Indian Foreign Policy & Indira Gandhi Year's 1990
16. M.S. Rajan, "India & NAM" world focus Oct-Nov. 1966.